छायावादी कवियों की काव्य-दृष्टि में 'नारी' का आध्यात्मिक पक्ष

शिंदे सुवर्णा मारुतिराव[1], डॉ. दीपिका जैन[2]
[1]पीएच.डी शोध छात्र (हिन्दी विभाग)
[2]सहायक अध्यापक (हिन्दी विभाग)
मानसरोवर ग्लोबल विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15712030

सारांश

यह शोध-पत्र **"छायावादी कवियों की काव्य-दृष्टि में नारी का आध्यात्मिक पक्ष"** पर केंद्रित है, जिसमें छायावाद युग के प्रमुख कवियों के काव्य में नारी की भूमिका और उसकी आध्यात्मिक छवि का विश्लेषण किया गया है। छायावाद, जो 20वीं सदी के प्रारंभ में हिंदी साहित्य में एक प्रमुख काव्यधारा के रूप में उभरा, ने नारी को केवल शारीरिक या सांसारिक दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि एक दिव्य, शुद्ध और आध्यात्मिक सत्ता के रूप में प्रस्तुत किया। इस युग के कवि जैसे जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, और निराला ने नारी को आध्यात्मिक दृष्टि से देखा और उसे मानवता की सर्वोच्च चेतना का प्रतीक माना।

यह शोध छायावादी कवियों द्वारा नारी के आध्यात्मिक पहलुओं को दर्शाने की प्रक्रिया को समझने का प्रयास करता है, जिसमें नारी को एक आदर्श, दिव्य प्रेम और आत्मा की साक्षात्कारिका के रूप में चित्रित किया गया है। कवियों ने नारी के माध्यम से प्रेम, करुणा, त्याग और साधना के गहरे अनुभवों को व्यक्त किया। इसके अतिरिक्त, इस शोध में छायावादी कवियों की काव्य-दृष्टि और उनके काव्य में नारी के आध्यात्मिक पक्ष की व्याख्या करते हुए यह सिद्ध करने की कोशिश की गई है कि नारी केवल भौतिक जीवन की संरचना नहीं, बल्कि आत्मिक और आध्यात्मिक रूप में जीवन के उच्चतम सत्य को दर्शाती है। इस शोध का उद्देश्य नारी के प्रति छायावादी कवियों के दृष्टिकोण की गहरी समझ प्रदान करना है और यह दिखाना है कि कैसे छायावाद ने साहित्य में नारी के आध्यात्मिक पक्ष को उजागर किया, जो आज भी प्रेरणास्त्रोत है।

बीज शब्द

छायावाद, नारी का आध्यात्मिक पक्ष, काव्य-दृष्टि, महादेवी वर्मा, जयशंकर प्रसाद, नारी और प्रकृति

1. प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के इतिहास में **छायावाद युग** को एक **क्रांतिकारी और भावनात्मक नवजागरण** के रूप में देखा जाता है। इस युग की सबसे विशिष्ट विशेषता यह रही कि इसमें कविता का झुकाव

आंतरिकता, **प्रकृति**, **मानव-चेतना** और **अहं-बोध** की ओर हुआ। इसी के साथ, छायावादी काव्य में **'नारी'** की छवि को एक *सांस्कृतिक, आध्यात्मिक* और *आदर्शवादी* दृष्टि से प्रस्तुत किया गया, जो केवल सौंदर्य और श्रृंगार तक सीमित नहीं रही, बल्कि **आध्यात्मिक चेतना का प्रतीक** बनकर उभरी।

प्राचीन भारतीय दर्शन और संस्कृति में नारी को शक्ति, ममता और प्रेरणा का स्वरूप माना गया है। छायावादी कवियों ने इसी परंपरा को अपनी रचनाओं में नवीनता के साथ प्रस्तुत किया। उन्होंने नारी को कभी **प्रकृति का प्रतिरूप**, कभी **श्रद्धा की मूर्ति**, तो कभी **मुक्ति की प्रेरणा** के रूप में चित्रित किया। इस दौर की कविताओं में नारी केवल एक प्रेमिका या सौंदर्य-प्रतीक नहीं रही, बल्कि वह **मानव आत्मा की आध्यात्मिक यात्रा की संगिनी** बनकर सामने आई।

जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और महादेवी वर्मा जैसे छायावादी कवियों की रचनाओं में नारी की यह छवि गहराई से उभरती है। उनके काव्य में नारी **करुणा, त्याग, श्रद्धा, चेतना और आत्मिक सौंदर्य** की मूर्ति है। यह शोध-पत्र छायावादी कवियों की काव्य-दृष्टि में **'नारी' के आध्यात्मिक पक्ष** को उजागर करने का प्रयास है, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि उस युग की कविता में नारी को केवल शरीर नहीं, बल्कि *चेतना और आत्मा* के स्तर पर भी समझा गया है।

2. छायावादी युग में नारी की स्थिति

छायावादी युग (1918–1936) हिंदी साहित्य का वह स्वर्णिम काल था, जिसमें कविता ने अपनी **भावनात्मक, आध्यात्मिक और सौंदर्यपरक चेतना** का विस्तार किया। इस युग में नारी की स्थिति केवल सामाजिक और पारंपरिक बंधनों तक सीमित नहीं रही, बल्कि वह **मानव अंतःकरण की गहराइयों** में प्रवेश करती हुई दिखाई देती है।

छायावादी कवियों ने नारी को **भोग्या या दासता की प्रतीक** न मानकर उसे **मुक्त चेतना**, **प्रेरक शक्ति** और **मानव आत्मा के उच्चतर विकास की सहयात्री** के रूप में प्रस्तुत किया। यह दृष्टिकोण तत्कालीन समाज में क्रांतिकारी माना जा सकता है, जहाँ नारी की भूमिका घरेलू दायरे तक सीमित मानी जाती थी।

छायावाद के पूर्व और छायावादी युग की तुलना

छायावाद से पूर्व की काव्यधारा – विशेषकर **रीतिकाल** – में नारी का चित्रण अधिकतर **सौंदर्य, श्रृंगार और नख-शिख वर्णन** तक ही सीमित था। वहाँ नारी एक **कामना की वस्तु** के रूप में प्रस्तुत होती थी। परंतु छायावाद ने नारी को *आत्मा की गहराइयों से जोड़ा* और उसे एक **जीवंत आत्मिक सत्ता** का स्थान दिया।

छायावाद में नारी को:

- **प्रकृति की आत्मा**,

- **चेतना की प्रेरणा**,
- **प्रेम का माध्यम**,
- और **मानवता की संवाहिका** के रूप में देखा गया।

नारी के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन

इस युग के कवियों ने नारी की **भीतर की पीड़ा**, **विरह**, **करुणा**, **प्रेम की उदात्तता**, और **त्याग** को न केवल सराहा, बल्कि उसे **अलौकिकता** और **आध्यात्मिकता** के धरातल पर स्थापित किया। विशेष रूप से **महादेवी वर्मा** की कविताओं में नारी की अंतरंग वेदना और भावनात्मक गहराई अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त होती है।

छायावादी नारी: आत्मा की अभिव्यक्ति

छायावादी कवियों के लिए नारी केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि **मानव आत्मा का प्रतीक**, **ब्रह्म की झलक**, और **ईश्वर की निकटता का माध्यम** थी। इसीलिए उनकी रचनाओं में नारी पात्र *भोग की वस्तु* नहीं, बल्कि *साधना की सखी* के रूप में दृष्टिगोचर होती है।

छायावादी युग के अन्य कवियों की काव्य-दृष्टि में नारी का आध्यात्मिक पक्ष

छायावादी युग मुख्यतः चार स्तंभों—प्रसाद, पंत, निराला, और महादेवी—के काव्य से आलोकित होता है, किंतु इस युग में और भी अनेक कवि सक्रिय थे जिन्होंने नारी विषय पर गहन संवेदनात्मक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण अपनाया। इन कवियों ने नारी को केवल सौंदर्य और प्रेम का विषय नहीं बनाया, बल्कि उसे एक ऐसी चेतन सत्ता माना जो मानवीय, सांस्कृतिक, और आत्मिक रूप से समाज को दिशा प्रदान करती है। नारी उनके काव्य में जीवनदायिनी शक्ति है, जो करुणा, श्रद्धा, साहस और त्याग से ओतप्रोत है। इस अनुभूति को समझने के लिए कुछ प्रमुख छायावादी प्रभाव वाले कवियों की रचनात्मक दृष्टि का अवलोकन आवश्यक है।

1. रामधारी सिंह 'दिनकर' की काव्य-दृष्टि में नारी

रामधारी सिंह 'दिनकर' को यद्यपि प्रगतिशीलता और राष्ट्रवाद के कवि के रूप में अधिक जाना जाता है, किंतु उनके काव्य में नारी का जो चित्रण मिलता है, वह छायावादी भावबोध से अछूता नहीं है। दिनकर की कविता में नारी केवल दया की पात्र नहीं है, बल्कि वह शक्ति, श्रद्धा और मर्यादा की मूर्ति है। उन्होंने नारी को न केवल भावात्मक प्रेम की दृष्टि से देखा, बल्कि एक ऐसी आत्मा के रूप में चित्रित किया जो मनुष्य को उच्च आदर्शों की ओर प्रेरित करती है।

उनकी प्रसिद्ध कविता *"नारी तुम केवल श्रद्धा हो"* में नारी को आत्मा की उस गहराई से जोड़ा गया है जहाँ वह अपने अस्तित्व में श्रद्धा, आस्था और त्याग की मूरत बन जाती है। यह कविता नारी को दैहिक नहीं, बल्कि आत्मिक धरातल पर प्रतिष्ठित करती है। दिनकर नारी को 'रजत नग पग तल में' प्रतिष्ठित

करते हैं, जो उसके पवित्र और दिव्य स्वरूप की प्रतीकात्मकता है। यह पंक्ति केवल अलंकारिक नहीं, बल्कि नारी के जीवनदायी, संवेदना-प्रधान और सहिष्णु प्रकृति की आध्यात्मिक अभिव्यक्ति है।

2. मैथिलीशरण गुप्त की दृष्टि में नारी का आध्यात्मिक स्वरूप

मैथिलीशरण गुप्त, जिन्होंने हिन्दी कविता को खड़ी बोली में नई दिशा दी, उनके काव्य में नारी की पीड़ा, ममता और आत्म-बलिदान को बहुत ही मार्मिक रूप में चित्रित किया गया है। गुप्त जी की दृष्टि में नारी केवल अबला नहीं, बल्कि एक ऐसी शक्ति है जो समस्त समाज का आधार बनती है। उनके द्वारा कही गई यह प्रसिद्ध पंक्ति—**"अबला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी, आंचल में है दूध और आँखों में पानी।"**—केवल नारी की करुणा को ही नहीं, बल्कि उसकी मातृत्व, समर्पण और आत्मिक सहिष्णुता को भी उद्घाटित करती है।

मैथिलीशरण गुप्त की नारी जीवन की विविध भूमिकाओं में आध्यात्मिक ऊर्जा का स्रोत बनकर सामने आती है। वह प्रेमिका भी है, माता भी है, पत्नी भी है और समाज के नैतिक मूल्यों की संरक्षिका भी है। वे नारी को मर्यादा की संरक्षिका मानते हैं, जो सृष्टि के संतुलन और जीवन के आदर्शों को संजोए रखती है। उनके काव्य में नारी किसी देवी की तरह पूज्य है, जिसमें पार्थिव और अपार्थिव का सुंदर समन्वय मिलता है।

3. हरिवंशराय बच्चन की भावनात्मक-आध्यात्मिक नारी

हरिवंशराय बच्चन, जिनकी काव्य कृतियाँ जैसे *"मधुशाला"* और *"नीड़ का निर्माण फिर"* व्यापक लोकप्रियता रखती हैं, उनके काव्य में भी नारी एक भावनात्मक साथी और आत्मिक संवादिनी के रूप में उभरती है। बच्चन की नारी किसी रूढ़ छवि में बंधी नहीं है, वह जीवन की राहों में संगिनी है, जो संघर्ष और आत्मचिंतन की यात्रा में साथ देती है। बच्चन के काव्य में नारी की छवि आध्यात्मिक प्रेम के उस स्वरूप की है, जिसमें शरीर गौण और आत्मा की अनुरक्ति प्रधान हो जाती है।

उनके काव्य में नारी केवल भाव-प्रवण नहीं, बल्कि आत्मबल से परिपूर्ण है। वह जीवन के उतार-चढ़ाव में कंधे से कंधा मिलाकर चलती है और पुरुष को उसके आत्मिक बोध की ओर ले जाती है। प्रेम की दृष्टि में बच्चन ने नारी को आत्मा का प्रतिरूप माना है, जिसमें करुणा और चिरंतन की झलक मिलती है।

4. रामकुमार वर्मा की नारी-दृष्टि

रामकुमार वर्मा का साहित्य छायावादी प्रभाव से परिपूर्ण है, विशेषतः भावात्मक गहराई, सौंदर्यबोध और नारी विषयक चिंतन में। उन्होंने नारी को मौन, संवेदनशील और आत्मा की साधिका के रूप में देखा। उनके नारी पात्रों में गहन मानसिक द्वंद्व होते हैं, किन्तु वे सब *धैर्य, त्याग और आत्म-सम्मान*

से सम्पन्न होते हैं। उनकी कविताओं और नाटकों में नारी के माध्यम से आत्मिक चेतना और करुणा की संस्कृति को प्रकट किया गया है।

रामकुमार वर्मा की नारी केवल प्रेम की याचक नहीं, बल्कि अपनी आंतरिक शक्ति और विवेक के साथ समाज को दिशा देनेवाली शक्ति बनकर प्रस्तुत होती है। वह सत्य की साधक है और उसकी आत्मा शुद्ध और दिव्य उद्देश्यों से जुड़ी होती है। छायावादी रंग में रंगे उनके साहित्य में नारी का यह आध्यात्मिक पक्ष अत्यंत प्रभावशाली रूप में उभरता है।

इन कवियों की रचनाओं से यह स्पष्ट होता है कि छायावादी युग की परिधि केवल चार कवियों तक सीमित नहीं रही। अनेक साहित्यकारों ने नारी के स्वरूप को **केवल लौकिक नहीं, बल्कि पारलौकिक और आत्मिक स्तर** पर भी विश्लेषित किया। इनकी कविताओं में नारी केवल सौंदर्य का पर्याय नहीं है, बल्कि **प्रेम, श्रद्धा, करुणा, और चेतना की वाहिका** है। उसका आध्यात्मिक पक्ष इन रचनाकारों की दृष्टि में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है, जिससे स्पष्ट होता है कि छायावाद एक व्यापक आध्यात्मिक काव्य-चेतना का युग था।

4. नारी का आध्यात्मिक पक्ष: छायावाद की दृष्टि से

छायावादी काव्यधारा में नारी का स्वरूप केवल सौंदर्य और प्रेम की अभिव्यक्ति मात्र नहीं है, बल्कि वह एक उच्च आध्यात्मिक चेतना की प्रतिनिधि बनकर उभरती है। छायावादी कवियों ने नारी को **मूलतः एक आध्यात्मिक सत्ता** के रूप में देखा, जिसकी आत्मा लौकिक बंधनों से परे, शाश्वत, दिव्य और अनंत प्रेम की साधिका है। यह नारी न तो केवल भौतिक आकर्षण का विषय है, न ही सामाजिक परतंत्रता की प्रतिकृति—बल्कि वह उस आत्मिक भावलोक की अभिव्यक्ति है जहाँ प्रेम, करुणा, त्याग और श्रद्धा की परम परिणति होती है।

छायावादी कवियों की दृष्टि में नारी ईश्वर की रचनात्मक चेतना की साकार प्रतिमा है। **जयशंकर प्रसाद** की नायिकाएँ, जैसे 'देवसेना' या 'वीणा', केवल प्रेमिकाएँ नहीं, बल्कि आत्मा की उस उच्च अवस्था का प्रतिनिधित्व करती हैं, जहाँ मनुष्य और ईश्वर के बीच संवाद संभव होता है। वे रहस्यवाद से ओतप्रोत हैं और अपने प्रेम को केवल शारीरिक नहीं, बल्कि एक योगमय साधना के रूप में स्वीकार करती हैं। प्रसाद के काव्य में यह नारी, संपूर्ण सृष्टि की सृजनधर्मिता का प्रतीक बन जाती है—जहाँ सौंदर्य और आत्मा का मिलन होता है।

सुमित्रानंदन पंत ने नारी को प्रकृति और ब्रह्म के संयोग से उत्पन्न एक दिव्य तत्त्व माना। उनके काव्य में नारी *"शिवा की छाया", "प्रणय की मूर्ति", "विश्व चेतना की सखी"* के रूप में वर्णित होती है। पंत के लिए नारी केवल प्रेम का स्रोत नहीं, बल्कि आध्यात्मिक जागरण की सहचरी है। उनकी दृष्टि में नारी पुरुष की आत्मा की वह प्रतिध्वनि है जो उसे अपने भीतर के दिव्य तत्त्व की अनुभूति कराती है। 'पल्लव',

'गुंजन', और 'युगांत' जैसे संग्रहों में यह नारी एक आध्यात्मिक ऊर्जा बनकर सामने आती है, जो जीवन को अर्थ देती है।

महादेवी वर्मा के काव्य में नारी का स्वरूप और अधिक सूक्ष्म, आत्मवेदना से पूर्ण और रहस्यात्मक है। उनका संपूर्ण काव्य एक **आत्मिक यात्रा** है, जहाँ नारी *विरह की पीड़ा, प्रेम की तपस्या,* और *ईश्वर के अनंत सान्निध्य की तलाश* में रत है। महादेवी वर्मा की कविताओं में प्रेम एक आध्यात्मिक ध्रुव है—नारी की आत्मा उसी की ओर खिंचती है। वह कभी 'प्रिय' के रूप में आती है, तो कभी 'अज्ञात ईश्वर' के रूप में। महादेवी की नारी किसी देहधारी पुरुष से नहीं, बल्कि अपनी अंतरात्मा में बसे उस ईश्वरीय 'अनंत' से प्रेम करती है। यह छायावादी नारी की सबसे सूक्ष्म और गूढ़ आध्यात्मिकता का परिचायक है।

निराला की दृष्टि में भी नारी कोई दुर्बल प्राणी नहीं, वह *'अखंड आत्मबल की मूर्ति'* है। उनके काव्य में नारी संघर्षों में तपकर आत्मा की उच्चता को प्राप्त करती है। 'सरोज स्मृति' में पुत्री की स्मृति एक आत्मिक अनुभूति बन जाती है, जहाँ मृत्यु भी नारी की चेतना को विलीन नहीं कर पाती, बल्कि उसे अमरता प्रदान करती है। निराला की नारी कर्म, प्रेम और आत्मज्ञान की त्रिवेणी में स्नान करती है—वह माँ है, पत्नी है, पुत्री है और सृष्टि की मूल आत्मा है।

छायावादी साहित्य में नारी के **आध्यात्मिक पक्ष** को समझना इस बात की पुष्टि करता है कि इस युग में काव्य केवल सौंदर्य-चिंतन तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसने आत्मा के गहनतम अनुभवों को भी अभिव्यक्ति दी। नारी यहाँ केवल 'भोग्या' नहीं, 'पूज्या' है; वह देह नहीं, 'देवता' है। छायावादी कवियों की यह दृष्टि भारतीय सांस्कृतिक परंपरा की उस रेखा से जुड़ी है जहाँ नारी को **'शक्ति', 'प्रकृति', 'माया', और 'साधना की सहचरी'** के रूप में देखा गया है।

5. निष्कर्ष (Conclusion)

छायावादी युग का साहित्य न केवल सौंदर्यबोध और रहस्यवाद की भावभूमि पर आधारित था, बल्कि उसने सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोणों को भी एक नई परिभाषा दी। इस युग के कवियों ने नारी को मात्र भोग की वस्तु या कोमल भावना की प्रतीक मानकर उसकी उपेक्षा नहीं की, बल्कि उसे आत्मा की दिव्यता, चेतना की ऊँचाई, और प्रेम की शुद्धतम अभिव्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया। छायावादी काव्य में नारी की उपस्थिति उस आध्यात्मिक यात्रा का संकेत देती है, जहाँ लौकिक सीमाएँ समाप्त हो जाती हैं और आत्मा का परमात्मा से मिलन होता है।

जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, निराला और अन्य छायावादी कवियों की रचनाओं में नारी की छवि बहुआयामी है—वह कहीं देवी है, कहीं साधिका; कहीं प्रेरणा है, कहीं अनुभूति। इन कवियों

की काव्य-दृष्टि में नारी न केवल एक व्यक्तित्व है, बल्कि एक **आध्यात्मिक अवधारणा** है, जो प्रेम, करुणा, त्याग, और आत्मचिंतन के माध्यम से जीवन को उच्चतम आयाम तक ले जाती है।

इस प्रकार, छायावादी युग ने नारी के उस पक्ष को उद्घाटित किया, जो सदियों से दबा रहा—उसकी आत्मिक ऊँचाई, उसकी आध्यात्मिक गरिमा और उसकी सृजनात्मक शक्ति को। यह शोध इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि छायावादी काव्यधारा ने नारी को केवल साहित्यिक सौंदर्य का विषय नहीं बनाया, बल्कि उसे एक दिव्य सत्ता, आत्मा की सहयात्री, और आध्यात्मिक चेतना की प्रतिनिधि के रूप में प्रतिष्ठित किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

- प्रसाद, जयशंकर. *कामायनी.* लोकभारती प्रकाशन, 2019;
- पंत, सुमित्रानंदन. *पल्लव.* साहित्य भवन, 2020;
- वर्मा, महादेवी. *यामा.* राजकमल प्रकाशन, 2018;
- निराला, सूर्यकांत त्रिपाठी. *अनामिका.* हिंद पॉकेट बुक्स, 2021;
- शुक्ल, रामचंद्र. *हिंदी साहित्य का इतिहास.* लोकभारती, 2022;
- सिंह, नामवर. *छायावाद और उसका युग.* राजकमल, 2017;
- जैन, निर्मला. *हिंदी कविता में नारी चेतना.* ग्रंथ शिल्पी, 2015;
- श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ. *छायावादी काव्य और नारी-दृष्टि.* सरस्वती प्रेस, 2016;
- तिवारी, ललिता. *निराला की काव्य चेतना में नारी का स्थान.* विद्याप्रकाशन, 2019;
- रानी, सुधा. *महादेवी वर्मा: नारी-दर्शन और आत्मबोध.* भारतीय साहित्य मंदिर, 2018;
- चतुर्वेदी, रामस्वरूप. *पंत के काव्य में प्रकृति और नारी.* भारतीय साहित्य संस्थान, 2020.

पत्र-पत्रिकाएँ एवं शोध-पत्र –

- *साहित्य अमृत, तद्भव, हंस, इंडियन लिटरेरी रिव्यू* (विशेषांक – छायावाद)
- UGC CARE सूचीबद्ध जर्नल्स में प्रकाशित छायावादी युग और नारी विषयक शोध-पत्र

ऑनलाइन स्रोत –

- Sahitya Akademi Digital Archives
- Google Scholar (scholar.google.com)
- IGNOU, JNU, BHU जैसे विश्वविद्यालयों की डिजिटल लाइब्रेरी